पर्यावरण अध्ययन पाठ्यपुस्तक : आरम्भ से अन्त तक

चन्द्रिका मुरलीधर और रोनिता शर्मा

पृष्ठभूमि

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 ने शिक्षा के प्रत्येक चरण में और समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए शैक्षिक प्रक्रिया में पर्यावरण सम्बन्धी सरोकारों को समेकित कर इस मुद्दे पर जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। एनसीएफ़ 2005 के मार्गदर्शक सिद्धान्त निम्नलिखित बातों पर ज़ोर देते हैं :

क. ज्ञान को स्कूल के बाहर के जीवन से जोड़ना,

ख. यह सुनिश्चित करना कि पढ़ाई रटन्त प्रणाली से मुक्त हो,

ग. पाठ्यचर्या का इस तरह संवर्धन करना कि वह बच्चों को चहुँमुखी विकास के अवसर मुहैया करवाए, बजाए इसके कि वह पाठ्यपुस्तक-केन्द्रित बनकर रह जाए

घ. परीक्षा को अपेक्षाकृत अधिक लचीला बनाना और कक्षा की गतिविधियों से जोड़ना,

ड. एक ऐसी अधिभावी पहचान का विकास जिसमें प्रजातांत्रिक राज्य-व्यवस्था के अन्तर्गत राष्ट्रीय चिन्ताएँ समाहित हों।

यशपाल रिपोर्ट, *शिक्षा बिना बोझ के*, में कहा गया है कि जब तक हम बच्चे के बारे में अपनी यह धारणा नहीं बदलते कि बच्चे ज्ञान के प्राप्तकर्ता हैं और परीक्षा के आधार के रूप में पाठ्यपुस्तकों का उपयोग करने की परिपाटी को छोड़ नहीं देते तब तक स्कूल में सीखना एक आनन्ददायक अनुभव नहीं बन सकता।

इस सन्दर्भ में उपर्युक्त निष्कर्षों के आधार पर न केवल पाठ्यपुस्तकों की कायापलट करना आवश्यक था बल्कि शिक्षा के उद्देश्यों के अनुरूप बनाने के लिए पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक पर फिर से विचार करना भी ज़रूरी था। वर्ष 2005 में एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तकों का एक नया सेट लिखा गया।

पर्यावरण अध्ययन क्या है?

वर्ष 1864 में ही जॉर्ज पर्किन्स ने इस मिथक को चुनौती दी थी कि प्राकृतिक संसाधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं और हमारे आर्थिक विकास के लिए इनका बेजा फ़ायदा उठाया जा सकता है। उसी प्रकार, 1864 में प्रकाशित अपनी पुस्तक *'मैन एंड नेचर'* में मार्श ने प्राकृतिक संसाधनों की अक्षयशीलता के विचार के बारे में अपनी चिन्ता जताई और प्रचुरता के मिथक को तोड़ा एवं सुधार की आवश्यकता को बताया।

भारत की स्कूली शिक्षा में पर्यावरण के सरोकारों की बात 1980 में की गई। इस सरोकार को पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से सम्बोधित किया गया। अपनी पुस्तक *एजुकेशन कॉन्फ्लिक्ट एंड पीस* (अध्याय-3 बिटवीन साइंस एंड साइंटिफिक टेम्पर) में कृष्ण कुमार बताते हैं कि 1960 के दशक की पाठ्यपुस्तकों में कारख़ाने का खण्ड-आरेख (block diagram) होता था जिसमें कारख़ाने को लम्बे और सक्रिय धुएँ के ढेर के साथ दिखाया जाता और शीर्षक होता – आधुनिक भारत के तीर्थ, *पिलग्रिमेजेज़ ऑफ़ मॉडर्न इण्डिया* और अब इसी आरेख पर एक संशोधित शीर्षक देखने में आता है – *प्रदूषण के स्रोत* (*सोर्सेस ऑफ़ पॉल्यूशन*)। वे आगे कहते हैं कि पर्यावरण अध्ययन की सामग्री सह-निवास या प्रकृति के साथ समायोजन के विचार को विकसित करने का प्रयास करती है, समायोजन न केवल पशुओं और पौधों के साथ बल्कि भौतिक वस्तुओं जैसे नदियों, पहाड़ों और समुद्र के साथ भी। यह विचार इस मूल्य-प्रतिमान पर आधारित है

कि सभी मानव कृत्यों की समीक्षा इस आधार पर की जानी चाहिए कि प्रकृति के सजीव और निर्जीव दोनों घटकों पर उनका प्रभाव पड़ सकता है।

इससे पहले कि हम पाठ्यपुस्तक लिखने के बारे में सोच-विचार शुरू करें, यह बात महत्त्वपूर्ण है कि पाठ्यपुस्तक के चरित्र को प्रभावित करने वाले पहलुओं पर स्पष्टता सुनिश्चित की जाए। पहली बात, लेखक को विषय की गहन समझ होनी चाहिए; दूसरी बात, पाठ्यपुस्तक का संज्ञानात्मक स्तर; और तीसरी (तथा सबसे महत्त्वपूर्ण) बात यह कि इसे बच्चे के लिए लिखा जा रहा है : इसका मतलब इसे एक मिनी-एन्साइक्लोपीडीया नहीं बना देना चाहिए।

यदि हम पहले पक्ष पर नज़र डालें तो प्रश्न उठता है कि हम पर्यावरण अध्ययन के बारे में क्या जानते हैं? ईवीएस का प्रयोग पर्यावरण-अध्ययन या पर्यावरण विज्ञान के रूप में किया जाता है (एकरूपता के लिए हम एनसीईआरटी द्वारा निर्धारित पहले शब्द का ही प्रयोग करेंगे)। जहाँ तक दूसरे और तीसरे पहलू की बात है तो उसका ध्यान विषय के लिए बनाए जाने वाले पाठ्यक्रम में रखा जाना चाहिए।

पर्यावरण अध्ययन विषय सामाजिक विज्ञान, विज्ञान और पर्यावरण शिक्षा से प्राप्त अन्तर्दृष्टि का एक सम्मिलन है। यह एक ऐसा विषय है जो प्राथमिक स्कूल में तीसरी कक्षा से शुरू किया जाता है और पाँचवीं कक्षा तक चलता है। वैसे कोशिश यह भी की जाती है कि पहली और दूसरी कक्षा में गणित और भाषा में पर्यावरण अध्ययन के तत्वों को शामिल किया जाए। इसके अलावा चूँकि अधिकांश प्राथमिक स्कूल पाठ्यचर्या में एकीकृत दृष्टिकोण पर काम किया गया है, इसलिए ईवीएस में प्रकरणों की बजाए उप-विषय या थीम प्रस्तावित की गई हैं ताकि एक सम्बद्ध और अन्तर्सम्बन्धित समझ का विकास किया जा सके। (*पर्यावरण अध्ययन, एनसीईआरटी पाठ्यक्रम*)। यहाँ जो बात सबसे महत्त्वपूर्ण है, वह यह है कि बच्चा अपने परिवेश को एक समग्र रूप में देखता है, अपने निकटतम वातावरण से घटनाओं को आत्मसात करता है और अनुभवों एवं सूचनाओं को अलग-अलग श्रेणियों में नहीं बाँटता। यदि यह दृष्टिकोण न अपनाया जाए तो पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तक में विविध विषयों के प्रकरण होंगे जो बच्चे में ज्ञान के समग्र सृजन को सम्बोधित नहीं करेंगे।

जिस तरह से ईवीएस विषय की परिकल्पना की गई है, उसे देखते हुए, इस क्षेत्र में पहचाने गए 'विशेषज्ञों' से ईवीएस पाठ्यपुस्तक के लिए सम्भावित लेखकों/योगदानकर्त्ताओं को चुनना एक चुनौती हो सकती है। अच्छा होगा कि हम सामाजिक विज्ञान, विज्ञान और पर्यावरण शिक्षा में विशेषज्ञता रखने वाले सदस्यों को साथ में लाएँ : जैसे कि वे शिक्षक जिन्होंने इस विषय को काफ़ी समय तक पढ़ाया है और वे लोग जो शिक्षणशास्त्र, लिंग अध्ययन, बाल विकास और पाठ्यक्रम अध्ययन की पृष्ठभूमि से हों (*पर्यावरण अध्ययन, एनसीईआरटी पाठ्यक्रम*)। आगे इस लेख में हम इन विशेषज्ञों को पाठ्यपुस्तक समिति (टेक्स्ट बुक कमेटी या टीसी) के नाम से सन्दर्भित करेंगे।

पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तक : आनन्दपूर्ण अधिगम का मार्ग

टीसी स्थापित होने के बाद यह आवश्यक है कि सारे सदस्य मिलकर काम करें क्योंकि इसका मुख्य उद्देश्य पहले बताए गए सभी पहलुओं को मिलाकर एक संसाधन सामग्री तैयार करना है। टीसी के प्रमुख कार्यों में से एक उन 'उप-विषयों या थीमों' पर आम सहमति तक पहुँचना है जो पाठ्यक्रम और बाद में पाठ्यपुस्तकों को संचालित करें।

उप-विषयों या थीम को अन्तिम रूप देने के बाद पाठ्यक्रम को सुस्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करने का कार्य करना होगा। वास्तव में यह पता लगाना ज़रूरी है कि क्या लेखकगण राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में वर्णित *शिक्षा के उद्देश्य* के सिद्धान्तों, पर्यावरण अध्ययन के अधिगम प्रतिफल और ईवीएस, एनसीईआरटी पाठ्यक्रम में बताए गए शिक्षा के उद्देश्यों से परिचित हैं ताकि वे उसे सन्दर्भ के रूप में लेकर कार्य करें जिससे कि पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक इन सभी के अनुरूप हों।

जब पाठ्यक्रम तय हो जाए तो लेखकों को अपनी पाठ्यपुस्तक के घटकों पर निर्णय लेना होगा : इसमें प्रतिबिम्बित होने वाला शैक्षणिक दृष्टिकोण, आकलन की रणनीतियाँ, चित्रों के प्रकार, गतिविधियाँ, बच्चे के वास्तविक जीवन के अनुभवों का समावेश और यह सुनिश्चित करना कि पाठ्यपुस्तक की सामग्री कक्षा में पर्यावरण अध्ययन सीखने को अवरुद्ध नहीं करती। कुछ अन्य घटक जिनका समावेशन भी आवश्यक है वे हैं लिंग और सामाजिक मुद्दे। सबसे प्रमुख बात यह है कि पर्यावरण अध्ययन पाठ्यपुस्तक (विशेष रूप से पाँचवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक) को छठी कक्षा के विज्ञान और सामाजिक विज्ञान विषय के साथ इस तरह से जोड़ना होगा कि जब बच्चा छठी कक्षा में इन विषयों को पढ़े तो उसे कोई दिक़्क़त न हो।

पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तक की संरचना

पाठ्यक्रम के बन जाने पर पाठ्यपुस्तक की सामग्री के निर्माण के लिए एक मज़बूत आधार मिलता है। पाठ्यपुस्तक के जो अध्याय पाठ्यक्रम के उप-विषय में से निकलकर आते हैं, उनके बारे में अच्छी तरह से सोचा जाना चाहिए, मुख्य रूप से उस संज्ञानात्मक चरण को ध्यान में रखना चाहिए जिसे हम सम्बोधित कर रहे हैं, यानी वह पुस्तक किस कक्षा के लिए है – तीसरी, चौथी या पाँचवीं कक्षा के लिए। आमतौर पर पुस्तक का आकार अर्थात पृष्ठों की संख्या सीमित होती है। अगर लेखकों को इस बात की जानकारी हो तो अच्छा होगा लेकिन जो कुछ आवश्यक है उसे अवश्य लिखना चाहिए, उन पर पृष्ठों की संख्या को लेकर कोई प्रतिबन्ध नहीं होना चाहिए।

जब अध्यायों की सामग्री तैयार की जा रही हो तो साथ में पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तकों के कुछ अंशों पर भी काम जारी रखना चाहिए। जैसे कि :

1. शिक्षक और माता-पिता के लिए नोट : पाठ्यपुस्तक लिखने का औचित्य, वे मार्गदर्शक सिद्धान्त जो पाठ्यपुस्तक की सामग्री को उनके साथ जोड़ते हैं, पाठ्यपुस्तक में अपनाए गए शिक्षणशास्त्रीय दृष्टिकोण, शामिल किए गए कार्यों के प्रकार आदि। शिक्षकों और अभिभावकों को पाठ्यपुस्तक का विवरण प्रदान करने के उद्देश्य से यह नोट दिया जा सकता है।
2. शिक्षक का पृष्ठ : इस पृष्ठ में किसी उप-विषय से सम्बन्धित अध्यायों की सामग्री का संक्षिप्त विवरण दिया जा सकता है जो पाठ्यपुस्तक का उपयोग करने वाले शिक्षक के लिए पाठ्यक्रम के तत्काल परिकलक (रेडी रेकनर) के रूप में कार्य करें और जिसमें प्रत्येक अध्याय के उद्देश्य और प्रमुख अवधारणाएँ शामिल हों। शिक्षक के पृष्ठ में पृष्ठों की संख्या के बारे में लेखकगण विचारपूर्वक निर्णय ले सकते हैं। उदाहरण के लिए यदि पर्यावरण अध्ययन का उप-विषय वस्त्र और आश्रय स्थल है जिस पर एक पाठ लिखा गया है तो पृष्ठ में निम्नलिखित बातें बताई जा सकती हैं :

अध्याय 'अ' का उद्देश्य एक ऐसा माहौल बनाना है जिसमें बच्चे ---------- (राज्य का नाम जिसके लिए पाठ्यपुस्तक लिखी गई है) में लोगों द्वारा पहनी जाने वाली विभिन्न प्रकार की पोशाकों और उन्हें बनाने के लिए उपयोग किए जाने वाले कपड़ों के बारे में समझ सकें। इसमें बुनकरों के पारम्परिक ज्ञान और समुदाय में दर्ज़ियों के योगदान की सराहना और सम्मान करने का एक सचेत प्रयास भी किया गया है।

इस अध्याय में शामिल गतिविधियाँ इस प्रकार हैं – चित्र बनाना, वस्तुओं के चित्रों का वस्तुओं से मिलान, फ़ील्ड विज़िट (पास के दर्ज़ी की दुकान पर जाना) और प्रयोग। साझा करने और एक-दूसरे की परवाह करने सम्बन्धी कार्यों को शामिल कर बच्चे को संवेदनशील करने का प्रयास किया गया है।

इस पृष्ठ में पर्यावरण अध्ययन के उन विभिन्न कौशलों का समावेशन किया जा सकता है जिन्हें उस उप-विषय में सम्बोधित किया जा रहा है जैसे अवलोकन, चर्चा, अभिव्यक्ति, स्पष्टीकरण, वर्गीकरण, पूछताछ, विश्लेषण, प्रयोग, न्याय, समानता और सहयोग के लिए सरोकार, आदि। *(पर्यावरण अध्ययन में आकलन की स्रोत पुस्तक, कक्षा-1 से 5)*

3. शिक्षक के लिए नोट : इन्हें पूरी पाठ्यपुस्तक में रखा जा सकता है। इनका उद्देश्य किसी विशेष पृष्ठ पर चर्चा की जा रही अवधारणा को पढ़ाने में शिक्षक का मार्गदर्शन करना है। नोट की सामग्री, शिक्षक को जिस टॉपिक पर चर्चा की जा रही है उसके बारे में और अधिक पढ़ने और खोज करने के लिए प्रेरित कर सकती है।

   (पाठ्यपुस्तक में उपरोक्त तीनों का स्थान लेखक अपने विवेकानुसार निश्चित कर सकते हैं।)

4. गतिविधियों के लिए प्रतीक/चिह्न : *लिखो, सोचो, समूहों में काम करो, चलो इसे बनाते हैं*, जैसी गतिविधियों के लिए प्रतीकों/चिह्नों आदि का उपयोग करने से पुस्तकें देखने में आकर्षक लगेंगी और साथ ही उनके माध्यम से बच्चे को गतिविधियों से जुड़ने में सहायता मिलेगी।

चित्र पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तक का एक अभिन्न हिस्सा हैं। रेखाचित्रों और चित्रों को सन्तुलित रूप से शामिल करने का प्रयास किया जा सकता है। रेखाचित्र रखने से बच्चे को पेंसिल से काग़ज़ पर लिखने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा और बच्चे में कलात्मक कौशल का भी पोषण होगा। इसके अलावा, चित्रकारों को रेखाचित्रों में लिंग-प्रतिनिधित्व के सम्बन्ध में सन्तुलन बनाए रखने के लिए सचेत रहना होगा। उदाहरण के लिए, यदि तस्वीर किसी परिवार की है, तो यह आवश्यक नहीं है कि माँ को बच्चों को गोद में लिए हुए या उनकी देखभाल करते हुए दिखाया जाए। पिता को भी घर के कामों को करते हुए दिखाया जा सकता है। इस अवधारणा को खोलने के लिए प्रासंगिक प्रश्न शामिल किए जा सकते हैं।

पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तकों में जो *प्रश्न* शामिल किए जाएँ, उन प्रश्नों को अन्वेषणात्मक होना चाहिए न कि ऐसे कि जिनके जवाब हाँ या नहीं में हों। आदर्श बात तो यह होगी कि ऐसे प्रश्नों को शामिल न किया जाए जो बच्चे में रटना सीखने के कौशल को नापने का प्रयास करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि भोजन और इसके इष्टतम उपयोग और उसकी बर्बादी से बचने पर चर्चा की जा रही है तो इस तरह के प्रश्न पूछे जा सकते हैं – *किसी त्यौहार को मनाने के बाद घर पर बचे हुए भोजन का आप क्या करते हैं? आपके पड़ोसी इस बारे में क्या करते हैं? वे बचे हुए भोजन का उपयोग कैसे करते हैं?* अपने दो पड़ोसियों के पास जाकर परिवार के बड़े सदस्यों से ये सवाल पूछें। *क्या आप अपनी थाली में परोसा हुआ सारा खाना खाते हैं? यदि नहीं, तो आप उस बचे हुए भोजन का क्या करते हैं?*

पाठ्यपुस्तक की तैयारी को पूर्ण करने के लिए उन शिक्षकों का उन्मुखीकरण करना होगा जो पर्यावरण अध्ययन की नई पाठ्यपुस्तक पढ़ाने वाले हैं। ऐसा करने से शिक्षक को इस बात में सहायता मिलेगी कि वे पाठ्यपुस्तक की सामग्री को प्रभावी ढंग से शिक्षार्थियों तक ले जा सकें। इससे पाठ्यपुस्तक के लेखकों को इस सम्बन्ध में अन्तर्दृष्टि मिलेगी कि कक्षा में पुस्तकों का उपयोग किस तरह से किया जा रहा है।

आगे की ओर

पर्यावरण अध्ययन के इन मूल्यों को आगे कैसे बढ़ाया जाता है?

सामाजिक विज्ञान का आधार पत्र *नियामक सरोकारों* को सामने लाता है, अर्थात 'सामाजिक विज्ञान स्वतंत्रता, विश्वास, पारस्परिक सम्मान और विविधता के प्रति सम्मान जैसे मानवीय गुणों के लिए एक जनाधार का निर्माण करने और उसका विस्तार करने की नियामक ज़िम्मेदारी का वहन करता है। यदि इसे माना जाए तो सामाजिक विज्ञान शिक्षण का लक्ष्य बच्चे में एक आलोचनात्मक नैतिक और मानसिक ऊर्जा की स्थापना होना चाहिए जिससे वे उन सामाजिक बाध्यताओं से मुक्ति पा सकें जो इन मूल्यों को हानि पहुँचाते हैं। पर्यावरण, जाति/वर्ग असमानता और राज्य दमन जैसी समस्याओं पर अन्तर्विषयक विधि से चर्चा करके पाठ्यपुस्तकों को बच्चे की विचार प्रक्रिया और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने का प्रयास करना चाहिए।

एनसीईआरटी की इतिहास की पाठ्यपुस्तक *भारत और समकालीन विश्व I और II* में, *जीविका, अर्थव्यवस्था और समाज* का उप-विषय बच्चे को वन में रहने वालों, किसानों, पशुपालकों के जीवन के बारे में बताता है और यह समझने में मदद करता है

स्क्रोल.इन

सर्वोच्च न्यायालय ने 10 लाख से अधिक आदिवासी और वन-वासी परिवारों को बेदख़ल करने का आदेश दिया।

सर्वोच्च न्यायालय ने 16 राज्यों की वन भूमि से आदिवासियों और अन्य वन-वासियों के 10 लाख से अधिक परिवारों को बेदख़ल करने का आदेश दिया है।

शीर्ष अदालत द्वारा 13 फरवरी को वन अधिकार अधिनियम की वैधता को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई के बाद यह आदेश आया। याचिकाकर्ताओं ने माँग की थी कि नए क़ानून के तहत पारम्परिक वन क्षेत्रों से सम्बन्धित दावों को ख़ारिज कर दिया जाना चाहिए।

कि उनका जीवन कुछ क़ानूनों और आधुनिकीकरण के कारण किस प्रकार से प्रभावित हुआ है। यह कई अन्य पहलुओं को भी सामने लाता है जैसे *कार्य, जीवन और आराम* । उदाहरण के लिए जब विद्यार्थियों को इस बात की जानकारी होती है कि आज की दुनिया के महान शहर, लन्दन और पेरिस औद्योगिक क्रान्ति के परिणाम-स्वरूप अस्तित्व में आए तो उन्हें आवास की समस्या, हाशिए के समूहों की स्थिति, स्वच्छता और यहाँ तक कि लन्दन में भूमिगत रेलवे के बारे में सोचने का अवसर मिलता है। निर्माण की प्रक्रिया में बड़े पैमाने पर विनाश पर टिप्पणी करते हुए चार्ल्स डिकेंस ने *डोम्बे और सोन* में निम्नलिखित लिखा :

"मकानों को गिराया गया : सड़कों को तोड़ा गया और बन्द कर दिया गया; ज़मीन में गहरे गड्ढे और खाइयाँ खोदी गईं; चारों और धूल और मिट्टी के भारी ढेर;... अपूर्णता के लाखों आकार और पदार्थ, जिन्हें व्यापक रूप से अपने स्थानों से हटा दिया गया, उलट, पृथ्वी में दफ़न..."

शहरीकरण की प्रक्रिया और दुनिया भर में शहरों का विकास पारिस्थितिकी और पर्यावरण की क़ीमत पर हुआ। 19वीं सदी के इंग्लैंड के शहर जैसे लीड्स, मैनचेस्टर में कारख़ाने की चिमनियों से धुआँ निकलते हुए देखा जा सकता था। लोगों ने स्वच्छ हवा की माँग शुरू कर दी और इसके लिए वे क़ानून के माध्यम से नियंत्रण चाहते थे। कलकत्ता (अब कोलकाता) ने भी वायु प्रदूषण की समस्या का सामना किया और औद्योगिक धुएँ से निपटने के लिए बंगाल धुआँ नियंत्रण आयोग बना।

वन, समाज और उपनिवेशवाद अध्याय विद्यार्थियों को वनों की कटाई, वृक्षारोपण, वाणिज्यिक वानिकी के उदय, वैज्ञानिक वानिकी और औपनिवेशिक शासकों द्वारा वन अधिनियम व आपराधिक जनजाति अधिनियम की भारत और अफ़्रीका में शुरुआत के इतिहास के बारे में बताता है और इस बात पर प्रकाश डालता है कि इन क़ानूनों ने जंगल में रहने वाले लोगों के जीवन को कैसे प्रभावित किया। केन्या में, मसाई मारा की चारागाह भूमि को उपनिवेशवादियों द्वारा जंगली जानवरों के लिए संरक्षित क्षेत्र के रूप में बदल दिया गया। उदाहरण के लिए सेरेंगेटी नेशनल पार्क को मसाई चारागाह भूमि के 14,760 किमी क्षेत्र में बनाया गया था।

सामाजिक और राजनीतिक जीवन की पाठ्यपुस्तक पर्यावरण अध्ययन के कई मुद्दों को सामने लाती है और उनके विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करती है। उदाहरण के लिए – पानी। यह पानी से सम्बन्धित शक्ति समीकरण के मुद्दों को उठाती है। पानी किसे मिलता है? किसको कितना पानी मिलता है? किसको कैसी गुणवत्ता वाला पानी मिलता है? पानी कौन लाता है आदि? *'हाशियाकरण की समझ'* अध्याय का एक अंश :

"इतिहास की पाठ्यपुस्तक औपनिवेशिक राज्य द्वारा वन नीतियों को आकार देने को रेखांकित करती है और वनों की कटाई जैसे मुद्दे को उन नीतियों की अभिव्यक्ति मानती है। एक सर्वेक्षण रिपोर्ट से पता चलता है कि आन्ध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा और झारखण्ड जैसे राज्यों से विस्थापित होने वाले 79 प्रतिशत लोग आदिवासी हैं। उनकी बहुत सारी ज़मीन देश भर में बनाए गए सैकड़ों बाँधों एवं जलाशयों में डूब चुकी है। पूर्वोतर भारत में उनकी

ज़मीन लम्बे समय से सशस्त्र बलों और उनके बीच चलने वाले टकरावों से बिंधी है।"

विद्यार्थियों को वर्तमान में समकालीन भारत का एक मुद्दा दिया जाता है। यह विद्यार्थियों को संघर्ष के बारे में गम्भीर रूप से सोचने का अवसर प्रदान करता है। क्या क़ानून औपनिवेशिक अतीत से अलग हैं? अपनी मातृभूमि से आदिवासियों के निष्कासन पर सुप्रीम कोर्ट का हाल में लिया गया फ़ैसला निश्चित रूप से विद्यार्थियों को गम्भीर रूप से सोचने और एक जानकार नागरिक बनने में मदद करेगा।

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तक में उठाए गए मूल्यों, सरोकारों और मुद्दों की तुलना में सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकें प्रगति को कहीं अधिक जटिल तरीके से देखती हैं।

References

National Curriculum Framework 2005
EVS NCERT Syllabus
Source Book of Assessment in EVS, Classes 1 to 5
India and the Contemporary World –I
India and the Contemporary World –II
Social and Political life- I and II
Man and Nature-George Perkins Marsh, edited by David Lowenthal
Education, Conflict and Peace-Krishna Kumar
Position Paper on Teaching of Social Sciences

चन्द्रिका मुरलीधर पिछले नौ वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथ हैं और वर्तमान में स्कूल ऑफ़ कंटीन्यूइंग एजुकेशन एंड यूनिवर्सिटी रिसोर्स सेंटर, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में कार्यरत हैं जहाँ वे पेशेवर विकास कार्यक्रमों में योगदान देती हैं। वे विज्ञान शिक्षा, शिक्षक क्षमता संवर्धन और पाठ्यपुस्तक लेखन के क्षेत्र में काम कर रही हैं। वे फ़ाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित प्रकाशनों की सम्पादकीय टीम का एक अभिन्न अंग हैं। उनसे chandrika@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

रोनिता शर्मा वर्तमान में इंस्टिट्यूट ऑफ़ असेसमेंट एंड एक्रिडिटेशन, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के साथ काम कर रही हैं। वे शिक्षकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम, बड़े पैमाने पर मूल्यांकन और पाठ्यपुस्तक लेखन में संलग्न हैं। उन्होंने एक दशक से भी अधिक प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान पढ़ाया है। उनसे ronita.sharma@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : नलिनी रावल **पुनरीक्षण :** प्रीति मिश्रा **कॉपी एडिटर :** ज्योति चौरड़िया